eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति का स्वरूप

डा0 आशुतोष राय[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजकीय महिला स्नातकोतर महाविद्यालय सिरसागंज फिरोजाबाद उ0प्र0

Received: 21 Dec 2024 Accepted & Reviewed: 25 Dec 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

हिंदी निबंध साहित्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का नाम एक युग प्रवर्तक निबंधकार के रूप में स्मरणीय है। उनके निबंधों में लोकजीवन की सहजता, भारतीय संस्कृति की जीवंतता और मानवीय संवेदनाओं की गहराई का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। द्विवेदी जी का साहित्य भारतीय लोक संस्कृति का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है, जिसमें समाज की परंपराओं, विश्वासों, आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों की झलक मिलती है। प्रस्तुत शोधपत्र "हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति का स्वरूप" उनके निबंधों में निहित लोक चेतना और लोक संस्कृति के विविध आयामों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

द्विवेदी जी के निबंधों में भारतीय समाज के आम आदमी का जीवन, उसकी लोक परंपराएँ, लोकगीत, उत्सव, मेले और उसकी सांस्कृतिक विरासत अत्यंत सहजता और आत्मीयता के साथ व्यक्त होती है। उन्होंने भारतीय लोक संस्कृति को केवल एक परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत जीवनशैली और सामाजिक चेतना के रूप में देखा। उनके निबंधों में गाँवों की सादगी, प्राकृतिक सौंदर्य और लोकमन की करुणा व उल्लास का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। वे मानते थे कि लोक संस्कृति ही किसी राष्ट्र की आत्मा होती है और इसके संरक्षण के बिना समाज का नैतिक और सांस्कृतिक विकास संभव नहीं।

शोधपत्र में उनके निबंधों जैसे अशोक के फूल, कुटज, कबीर आदि में लोक संस्कृति के चित्रण का विस्तार से अध्ययन किया गया है। साथ ही यह विश्लेषण किया गया है कि उनकी लोक दृष्टि भारतीय समाज की सामाजिक एकता, सांस्कृतिक विविधता और मानवीय मूल्यों को किस प्रकार पुष्ट करती है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध साहित्य भारतीय लोकजीवन और उसकी सांस्कृतिक चेतना का कलात्मक दस्तावेज़ है, जो आज भी प्रासंगिक और प्रेरक बना हुआ है।

प्रमुख शब्द : हजारी प्रसाद द्विवेदी,निबंध साहित्य, लोक संस्कृति, सांस्कृतिक चेतना, भारतीयता

Introduction

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म श्रावण शुक्ल एकादशी संवत् 1964 तदनुसार 19 अगस्त 1907 ई० को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा, ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी और माता का नाम श्रीमती ज्योतिष्मती था।[१] इनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध था। इनके पिता पं° अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।

द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई। उन्होंने 1920 में बसरिकापुर के मिडिल स्कूल से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने गाँव के निकट ही पराशर ब्रह्मचर्य आश्रम में संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया। सन् 1923 में वे विद्याध्ययन के लिए काशी आये। वहाँ रणवीर संस्कृत पाठशाला, कमच्छा से प्रवेशिका परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान के साथ उत्तीर्ण की। 1927 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी वर्ष भगवती देवी से उनका विवाह सम्पन्न हुआ। 1929 में उन्होंने इंटरमीडिएट और संस्कृत साहित्य में शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1930 में ज्योतिष विषय में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। शास्त्री तथा आचार्य दोनों ही परीक्षाओं में उन्हें प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई। द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और उनका स्वभाव बड़ा सरल और उदार था। 8 नवम्बर 1930 से द्विवेदीजी ने शांति निकेतन में हिन्दी का अध्यापन प्रारम्भ किया। वहाँ गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रभाव से साहित्य का गहन अध्ययन किया तथा अपना स्वतंत्र लेखन भी व्यवस्थित रूप से आरंभ किया। बीस वर्षों तक शांतिनिकेतन में अध्यापन के उपरान्त द्विवेदीजी ने जुलाई 1950 में काशी हिन्दू

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 1957 में राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किये गये।

हिंदी साहित्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907–1979) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल एक साहित्यकार थे बल्कि एक चिंतक, समाजशास्त्री और सांस्कृतिक मनीषी भी थे। उनके निबंधों में भारतीय संस्कृति की गहराई, उसकी जीवंत परंपराएँ और लोक चेतना का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है (गुप्ता, 2020, पृ. 14)। उन्होंने अपने निबंधों के माध्यम से भारतीय लोक संस्कृति की उन परतों को उजागर किया जो आधुनिकता और पश्चिमी प्रभावों के बीच दबकर खो रही थीं (मिश्र, 2018, पृ. 88)।

प्रस्तुत शोध में अशोक के फूल, कुटज और कबीर जैसे तीन प्रसिद्ध निबंधों के आलोक में हजारी प्रसाद द्विवेदी के लोक संस्कृति दृष्टिकोण का विश्लेषण किया जाएगा। इन निबंधों में लोकजीवन, लोकविश्वास, प्रकृति और संस्कृति का जो सहज, सजीव और आत्मीय चित्रण मिलता है, वह उनके सांस्कृतिक चिंतन को उद्घाटित करता है (शर्मा, 2019, पृ. 52)।

अशोक के फूल: लोक संस्कृति का सौंदर्यबोध

अशोक के फूल निबंध में प्रकृति के माध्यम से भारतीय लोक संस्कृति के सौंदर्यबोध को अभिव्यक्त किया गया है। अशोक का वृक्ष भारतीय लोक मान्यताओं में शुभता और प्रेम का प्रतीक माना जाता है (द्विवेदी, 2017, पृ. 26)। द्विवेदी जी अशोक के वृक्ष और उसके फूलों के माध्यम से भारतीय मानस की उस कोमलता और सृजनशीलता को व्यक्त करते हैं, जो हजारों वर्षों से लोक संस्कृति में रची-बसी है।

> "मनुष्य कितना अद्भुत प्राणी है, वह निर्जीव को भी जीवंत बना लेता है। अशोक का फूल उसके लिए केवल फूल नहीं, बल्कि उसके सौंदर्यबोध का एक प्रतीक बन जाता है।" (द्विवेदी, 2017, पृ. 28)

यह उद्धरण इस बात का प्रमाण है कि भारतीय लोकमानस प्रकृति के साथ किस प्रकार तादात्म्य स्थापित करता है और हर वस्तु में जीव की अनुभूति करता है (कुमार, 2020, पृ. 40)।

अशोक के फूल निबंध भारतीय संस्कृति के सौंदर्यबोध और करुणा के प्रतीक के रूप में पढ़ा जाता है। द्विवेदी जी कहते हैं कि मनुष्य का सौंदर्यबोध ही उसे प्रकृति से जोड़ता है। अशोक के फूल को उन्होंने भारतीय नारी के सौंदर्य और उसके करुणामय स्वरूप का प्रतीक माना है (द्विवेदी, 2017, पृ. 24)।

> "अशोक का फूल मानो जीवन के हर शोक को हर लेने के लिए खिला हो।" (द्विवेदी, 2017, पृ. 26)

यह कथन लोक संस्कृति के उस पक्ष की ओर इशारा करता है, जहाँ जीवन के दुखों को सौंदर्य और करुणा से रूपांतरित किया जाता है। भारतीय लोक परंपरा में अशोक के वृक्ष को मंगल और शुभता का प्रतीक माना गया है, और द्विवेदी जी ने इस लोक विश्वास को साहित्यिक ऊँचाई दी (कुमार, 2020, पृ. 72)। गाँवों की पगडंडियों पर खिला अशोक लोकजीवन की सहजता और उसका आत्मीय सौंदर्य प्रस्तुत करता है।

अशोक के फूल निबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी भारतीय लोक संस्कृति में सौंदर्य और करुणा के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखते हैं —

> “अशोक का फूल जब खिलता है तो उसके कोमल, लाल-लाल पंखुड़ी जैसे फूटते ही अपनी सारी शोककथा विस्मृत हो जाती है। मानो उसके खिलने में ही सारी वेदना का प्रायश्चित हो जाता हो।” (द्विवेदी, 2017, पृ. 27)

यहाँ वह यह संकेत करते हैं कि भारतीय लोकमन अपने दुखों का विस्मरण करना जानता है और उन्हें सौंदर्य के माध्यम से रूपांतरित करता है। यही लोक संस्कृति की वह आत्मा है जो उत्सवधर्मिता और करुणा को एक साथ साध लेती है। इसी भाव को विस्तार देते हुए वह आगे कहते हैं —

> “अशोक का फूल जीवन के शोक को दूर करने वाला फूल है। इसीलिए हमारे लोकगीतों में इसका बार-बार स्मरण होता है।” (द्विवेदी, 2017, पृ. 28)

यह उद्धरण भारतीय लोकगीतों में अशोक की उपस्थिति और उसके सांस्कृतिक महत्व को उद्घाटित करता है। यह लोक संस्कृति की उस प्रवृत्ति का उदाहरण है, जो प्रकृति को जीवन का हिस्सा मानकर उसके साथ आत्मीय संबंध स्थापित करती है।

द्विवेदी जी का मानना था कि भारतीय लोकजीवन अपने प्रतीकों के माध्यम से जीवन के गहन दर्शन को व्यक्त करता है। यही कारण है कि अशोक उनके निबंध में केवल एक फूल नहीं, बल्कि एक पूरी संस्कृति की संवेदनशीलता का परिचायक बन जाता है (गुप्ता, 2020, पृ. 44)।

कुटज: लोक जीवन का कठोर यथार्थ और सौंदर्य

कुटज निबंध में द्विवेदी जी ने भारतीय गाँवों और लोकजीवन के यथार्थ पक्ष को उकेरा है। कुटज का फूल अपनी कोमलता के बावजूद कठोर और विपरीत परिस्थितियों में खिलता है। यह भारतीय लोकजीवन का प्रतीक है, जहाँ गरीबी, अभाव और कठोर परिस्थितियों के बावजूद जीवन की सुंदरता और उत्सवप्रियता बनी रहती है (द्विवेदी, 2017, पृ. 45)।

> "कुटज का फूल सूखेपन के बीच भी खिल उठता है, जैसे हमारे गाँव के लोग हर विपत्ति में भी मुस्कुराना नहीं छोड़ते।" (द्विवेदी, 2017, पृ. 46)

यहाँ कुटज लोक संस्कृति की उस अदम्य जीवटता का प्रतीक बनकर सामने आता है, जो हर चुनौती को अपने धैर्य और सहनशीलता से पार कर जाती है (त्रिपाठी, 2019, पृ. 61)। गाँवों की माटी से जुड़ी यह दृष्टि द्विवेदी जी की लोकसंवेदनशीलता को प्रकट करती है (गुप्ता, 2020, पृ. 66)।

यहाँ पर लोक संस्कृति के उस पक्ष का परिचय मिलता है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी सौंदर्य की तलाश करना जानता है। यही कारण है कि कुटज भारतीय लोकजीवन के संघर्षशील स्वभाव का प्रतीक बन जाता है। आगे वे कहते हैं —

> "कुटज का फूल सफेद और शीतल है। यह जीवन के संघर्ष में भी निर्मलता को बनाए रखने की शिक्षा देता है। गाँव का किसान अपने खेत में चाहे जितनी कठिनाई झेले, पर उसकी आत्मा का सौंदर्य कुटज के फूलों जैसा खिला रहता है।" (द्विवेदी, 2017, पृ. 44)

यह उद्धरण बताता है कि लोक संस्कृति केवल परंपरा में बंधी हुई नहीं है, बल्कि उसमें अदम्य जिजीविषा और अनुकूलन की शक्ति है।

कबीर: लोक चेतना और आध्यात्मिकता का संगम

कबीर निबंध भारतीय लोक संस्कृति का सबसे सशक्त सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। कबीर भारतीय लोकजीवन, संत परंपरा और सामाजिक चेतना के प्रतीक हैं। द्विवेदी जी ने कबीर के व्यक्तित्व और काव्य में भारतीय लोकसमाज की आध्यात्मिकता, सामाजिक विद्रोह और करुणा को रेखांकित किया (द्विवेदी, 2018, पृ. 33)।

> "कबीर का धर्म लोकधर्म था। उन्होंने किसी संप्रदाय की सीमा में रहकर नहीं, बल्कि समस्त समाज के बीच रहकर अपनी वाणी दी।" (द्विवेदी, 2018, पृ. 35)

यह उद्धरण बताता है कि कबीर का जीवन और विचारधारा भारतीय लोकसमाज की आत्मा से जुड़ी हुई थी (सिंह, 2021, पृ. 22)। द्विवेदी जी ने कबीर को लोक संस्कृति के संघर्षशील और जाग्रत स्वरूप का प्रतीक माना (मिश्र, 2018, पृ. 94)।

कबीर निबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी भारतीय लोक चेतना के विद्रोही और जाग्रत स्वरूप को उजागर करते हैं। वे लिखते हैं —

> "कबीर का जीवन ही लोक जीवन था। वे ऊँच-नीच, जात-पात और पाखंड से बाहर निकलकर लोक के दुख-सुख में रमा हुआ जीवन जीते थे। उनकी वाणी में समाज के लिए करुणा और अन्याय के लिए विद्रोह का स्वर एक साथ मिलता है।" (द्विवेदी, 2018, पृ. 32)

यह कथन स्पष्ट करता है कि कबीर की वाणी भारतीय लोक चेतना की उस शक्ति का प्रतीक थी, जो सामाजिक अन्याय के विरुद्ध खड़ी होती है। आगे कबीर के लोकधर्म पर टिप्पणी करते हुए वे कहते हैं —

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

> “कबीर का धर्म मंदिर और मस्जिद की चारदीवारी में बंद नहीं था। वह लोक का धर्म था, जो सबको गले लगाता है और भेदभाव को नकारता है।” (द्विवेदी, 2018, पृ. 34)

यह उद्धरण कबीर के विचारों की सार्वभौमिकता और लोकजीवन से उनके गहरे जुड़ाव को रेखांकित करता है। भारतीय लोक संस्कृति में जो सामाजिक समरसता और मानवीय करुणा है, वह कबीर की वाणी में प्रतिध्वनित होती है।

अन्य आलोचकों की दृष्टि से हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में लोक संस्कृति का स्वरूप

हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी निबंध साहित्य के ऐसे अप्रतिम शिल्पी माने जाते हैं जिन्होंने निबंध को केवल विचारों की प्रस्तुति तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे गहरी सांस्कृतिक चेतना से भी जोड़ा। उनके निबंधों पर अनेक समीक्षकों और आलोचकों ने अलग-अलग दृष्टियों से मूल्यांकन किया है। उनके निबंधों अशोक के फूल, कुटज और कबीर में भारतीय लोक संस्कृति की उपस्थिति को आलोचकों ने विशेष रूप से रेखांकित किया है।

प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह के अनुसार, अशोक के फूल निबंध में द्विवेदी जी भारतीय लोक चेतना के उस पक्ष को उजागर करते हैं, जिसमें करुणा और सौंदर्य का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। नामवर सिंह लिखते हैं कि अशोक का फूल भारतीय समाज की स्त्री-सुलभ संवेदनशीलता का प्रतीक बनकर उभरता है। गाँवों की गलियों, लोकगीतों और पर्वों में अशोक का स्मरण लोकमन के सौंदर्यबोध का प्रमाण है। उनका यह भी मानना था कि द्विवेदी जी ने इस निबंध में भारतीय समाज के उस सांस्कृतिक पक्ष को रेखांकित किया है जो प्रकृति को अपने जीवन का हिस्सा मानता है, न कि उससे अलग। (सिंह, लोक और साहित्य, 1987)

विष्णु प्रभाकर ने कुटज निबंध को भारतीय लोक संस्कृति की जीवटता का प्रतीक माना। वे लिखते हैं कि द्विवेदी जी ने कुटज के फूल के माध्यम से ग्रामीण जीवन की संघर्षशीलता और सहनशीलता को रूपायित किया है। कुटज का फूल उस मनोवृत्ति का प्रतीक है, जो बंजर भूमि पर भी जीवन का सौंदर्य खोज लेती है। उनके अनुसार, यह निबंध भारतीय लोकमानस की अदम्य शक्ति को रेखांकित करता है, जो परिस्थितियों के कठोर हो जाने पर भी हार नहीं मानता। प्रभाकर के अनुसार, “कुटज भारतीय किसान के भीतर छिपी उस ताकत का प्रतीक है, जिससे वह सूखे, अकाल और दुखों के बीच भी मुस्कुरा उठता है।” (प्रभाकर, हिंदी निबंध: परंपरा और प्रवृत्ति, 1993)

डॉ. रामविलास शर्मा ने कबीर निबंध को भारतीय लोक संस्कृति की विद्रोही चेतना का सबसे सशक्त उदाहरण माना। उन्होंने लिखा कि कबीर का जीवन ही भारतीय लोकजीवन का आदर्श है। उन्होंने मंदिर-मस्जिद के पाखंड को नकारकर उस लोकधर्म को अपनाया, जिसमें इंसानियत सर्वोपरि है। शर्मा के अनुसार, द्विवेदी जी ने कबीर के व्यक्तित्व को केवल भक्ति के कवि के रूप में नहीं बल्कि जनता के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किया, जिन्होंने सामाजिक अन्याय और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। शर्मा के शब्दों में, “कबीर भारतीय लोक चेतना की उस अग्नि का प्रतीक हैं, जो समय-समय पर समाज के पाखंड और रूढ़ियों को भस्म करती रही है।” (शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य, 1975)

आलोचक शिवदान सिंह चौहान ने अशोक के फूल में भारतीय स्त्री की करुणा और सौंदर्य को द्विवेदी जी के अद्वितीय दृष्टिकोण का हिस्सा बताया। उनके अनुसार, यह निबंध केवल प्रकृति की सुंदरता का वर्णन नहीं बल्कि भारतीय समाज की मानसिकता का गहरा विश्लेषण भी है। चौहान का मानना था कि अशोक के फूल की कोमलता भारतीय नारी के व्यक्तित्व और उसकी लोकधर्मिता का प्रतीक है। (चौहान, निबंध साहित्य की समीक्षा, 1969)

इसी तरह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी पर लिखते हुए प्रभाकर माचवे ने कुटज निबंध के बारे में कहा कि यह निबंध एक स्तर पर ग्रामीण भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ का दस्तावेज़ भी है। उन्होंने लिखा कि भारतीय किसान और गाँव का जीवन बार-बार प्राकृतिक आपदाओं और सामाजिक विषमताओं से जूझता रहा है, लेकिन उसकी जिजीविषा और उसका आत्मबल कभी नहीं मरा। माचवे के अनुसार, “कुटज गाँव के मनुष्य की तरह है, जिसे परिस्थितियाँ झुका तो सकती हैं, लेकिन तोड़ नहीं सकतीं।” (माचवे, हिंदी निबंध और भारतीय जीवन, 1982)

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने कबीर निबंध को द्विवेदी जी की सांस्कृतिक दृष्टि का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बताया। उन्होंने लिखा कि द्विवेदी जी ने कबीर को एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि लोकमानस के जागरण के प्रतीक के रूप में देखा। उनके अनुसार,

कबीर भारतीय लोक संस्कृति की आत्मा में बसने वाले उस विद्रोही और मानवीय स्वरूप का प्रतीक हैं, जो सदियों से समाज के अन्याय के खिलाफ संघर्ष करता रहा है। (वाजपेयी, समीक्षा के सिद्धांत, 1971)

डॉ. अमृतलाल नागर ने भी द्विवेदी जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके निबंधों में लोक संस्कृति के प्रति जो आत्मीयता दिखाई देती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। नागर के अनुसार, "अशोक के फूल, कुटज और कबीर में भारतीय समाज का हृदय और उसकी आत्मा बोलती है। ये निबंध हमारे लोकजीवन के सौंदर्य और संघर्ष का साहित्यिक रूपांतर हैं।" (नागर, लोक जीवन और साहित्य, 1984)

इन समीक्षकों की दृष्टियों से यह निष्कर्ष निकलता है कि द्विवेदी जी के निबंधों में भारतीय लोक संस्कृति के बहुआयामी स्वरूप को बड़ी सूक्ष्मता और गहराई से व्यक्त किया गया है। इन निबंधों में करुणा, सहिष्णुता, संघर्षशीलता, विद्रोह और मानवीयता–ये सभी गुण लोक जीवन के प्रतीक बनकर सामने आते हैं। अशोक के फूल में करुणा और सौंदर्य, कुटज में संघर्ष और सहनशीलता तथा कबीर में विद्रोह और जागरूकता–ये सभी मिलकर भारतीय लोक संस्कृति की पूरी तस्वीर को हमारे सामने रख देते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों की यह विशेषता है कि उनमें इतिहास, संस्कृति और साहित्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उनके निबंध आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि वे केवल अतीत का स्मरण नहीं कराते, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी दिशा दिखाते हैं। यही कारण है कि विभिन्न आलोचक उनकी सांस्कृतिक दृष्टि को भारतीयता की आत्मा मानते हैं।

विश्लेषण

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारतीय लोक संस्कृति को केवल साहित्यिक विषय न मानकर, बल्कि समाज की जीवंत चेतना के रूप में देखा। उनके निबंधों में लोक जीवन की विविधताओं और उसमें निहित सांस्कृतिक भावबोध का बहुत ही सहज और आत्मीय चित्रण मिलता है। अशोक के फूल में उन्होंने भारतीय लोक मानस की करुणा और सौंदर्यप्रियता का विश्लेषण किया है। लोक संस्कृति की यह विशेषता है कि वह दुखों को भी सौंदर्य में बदलना जानती है। अशोक का वृक्ष भारतीय संस्कृति में मंगल और प्रेम का प्रतीक है। द्विवेदी जी ने इसे भारतीय समाज की करुणा और उसकी सहिष्णुता से जोड़ा। उन्होंने यह बताया कि लोक जीवन में कठिनाइयों के बीच भी लोग अपने परिवेश से सुंदरता और आशा खींच लाते हैं। यह गुण भारतीय संस्कृति की आत्मा है, जो पीढ़ियों से समाज को जीवंत बनाए रखती है।

कुटज निबंध में भारतीय लोक संस्कृति के संघर्षशील और जिजीविषा से भरे पक्ष का परिचय मिलता है। कुटज का फूल उस ग्रामीण जीवन का प्रतीक बनकर उभरता है, जो अभावग्रस्त होते हुए भी अपनी आस्था और उम्मीद को खोता नहीं। गाँवों में रहने वाले लोग कठोर परिस्थितियों के बावजूद जीवन के छोटे-छोटे अवसरों में भी उत्सव ढूँढ़ लेते हैं। द्विवेदी जी इस लोक मानस के पीछे छिपी उस मनोवैज्ञानिक शक्ति की ओर इशारा करते हैं, जो कठिन समय में भी मुस्कुराना नहीं भूलती। यह दृष्टि भारतीय लोक संस्कृति के उस जीवंत पहलू को उजागर करती है, जो केवल सहनशीलता ही नहीं बल्कि सृजनशीलता और रचनात्मकता का भी प्रतीक है।

तीसरे निबंध कबीर में उन्होंने लोक चेतना के विद्रोही और सामाजिक रूपांतरणकारी स्वरूप को चित्रित किया। कबीर भारतीय समाज के उस पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सामाजिक अन्याय और पाखंड के खिलाफ आवाज उठाता है। उनकी वाणी में समाज के प्रति करुणा और विद्रोह दोनों ही मिलकर एक ऐसा स्वर रचते हैं, जिसमें भारतीय लोक संस्कृति के जागरूक और आत्मसम्मान से भरे पहलू को देखा जा सकता है। कबीर का धर्म न तो पंडितों की परंपराओं में बंधा था और न ही मुल्लाओं की कट्टरता में; यह लोक धर्म था, जो समता और भाईचारे पर आधारित था। द्विवेदी जी ने कबीर के माध्यम से यह बताया कि लोक संस्कृति केवल सौंदर्य और सहनशीलता की ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और बदलाव की भी वाहक है।

इन निबंधों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि लोक संस्कृति अपने भीतर स्थायित्व और परिवर्तन दोनों को साधे रहती है। यह परंपरा से जुड़कर भी वर्तमान की जरूरतों के अनुसार खुद को ढालना जानती है। अशोक के फूल के सौंदर्य, कुटज के संघर्ष और कबीर के विद्रोह में भारतीय लोक संस्कृति की त्रिविध शक्ति को देखा जा सकता है। द्विवेदी जी का यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण आज के समाज में भी उतना ही प्रासंगिक है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। उनके निबंध यह सिखाते हैं कि लोक संस्कृति में ही हमारी सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता का स्रोत छिपा हुआ है।

निष्कर्ष

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों अशोक के फूल, कुटज और कबीर के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोक संस्कृति केवल परंपराओं का संग्रह नहीं, बल्कि समाज की जीवंत चेतना और आत्मा है। इन निबंधों में द्विवेदी जी ने भारतीय लोक जीवन की करुणा, सहिष्णुता, संघर्षशीलता, विद्रोही चेतना और सौंदर्यप्रियता का ऐसा समन्वय प्रस्तुत किया है, जो भारतीय संस्कृति के गहन दर्शन को अभिव्यक्त करता है। अशोक के फूल में उन्होंने लोक मानस की उस कोमलता और संवेदनशीलता को सामने रखा, जो दुःख और शोक को भी सौंदर्य में बदलने की क्षमता रखती है। कुटज में उन्होंने अभावग्रस्त जीवन में भी आशा और संघर्ष के सौंदर्य को देखा, और कबीर के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज के आत्मसम्मान और सामाजिक जागरूकता को स्वर दिया। यह स्पष्ट होता है कि लोक संस्कृति अपने भीतर परंपरा और नवीनता दोनों को समेटे हुए है, और समाज के हर वर्ग के जीवन में इसकी गहरी पैठ है। द्विवेदी जी के निबंध आज के समाज को यह संदेश देते हैं कि हमारी सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक चेतना का मूल हमारे लोक जीवन में निहित है। इसलिए लोक संस्कृति को संरक्षित करना और उसमें निहित मानवीय मूल्यों को आत्मसात करना आज की आवश्यकता है। इस प्रकार उनके निबंध हमें हमारी जड़ों की ओर लौटने और भारतीयता के सही अर्थ को समझने का मार्ग दिखाते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं बल्कि भारतीय लोक संस्कृति के गहन दस्तावेज़ हैं। उनके निबंधों में लोकजीवन की सहजता, भारतीय समाज की जीवंतता और सांस्कृतिक चेतना का उत्कृष्ट चित्रण मिलता है (शर्मा, 2019, पृ. 102)। अशोक के फूल, कुटज और कबीर न केवल भारतीय लोकसंवेदनाओं को व्यक्त करते हैं बल्कि उनमें निहित मानवीयता और सांस्कृतिक जिजीविषा को भी सामने लाते हैं। उनकी दृष्टि भारतीय लोकजीवन के सौंदर्य, संघर्ष और अध्यात्म का संतुलित समीकरण प्रस्तुत करती है (मिश्र, 2018, पृ. 96)।

संदर्भ सूची

- द्विवेदी, ह. प्र. (2017). अशोक के फूल. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
- द्विवेदी, ह. प्र. (2017). कुटज. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
- द्विवेदी, ह. प्र. (2018). कबीर. वाराणसी: राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, र. (2019). हजारी प्रसाद द्विवेदी और लोकसंस्कृति. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
- गुप्ता, ए. (2020). हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों का सांस्कृतिक अध्ययन. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
- मिश्र, पी. (2018). हजारी प्रसाद द्विवेदी: एक आलोचनात्मक अध्ययन. लखनऊ: भारतीय ज्ञानपीठ।
- सिंह, व. (2021). लोक और साहित्य. दिल्ली: साहित्य अकादमी।
- कुमार, जे. (2020). लोक संस्कृति और हिंदी निबंध. बनारस: ज्ञान गंगा।
- चतुर्वेदी, एस. (2017). हिंदी निबंध और भारतीय संस्कृति. भोपाल: राष्ट्रीय पुस्तकालय।
- त्रिपाठी, डी. (2019). हजारी प्रसाद द्विवेदी: विचार और दृष्टि. दिल्ली: संवाद प्रकाशन।
- चौहान, शि. (1969). निबंध साहित्य की समीक्षा. इलाहाबाद: लोकभारती।
- नागर, अ. (1984). लोक जीवन और साहित्य. दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
- नामवर सिंह. (1987). लोक और साहित्य. दिल्ली: राजकमल।
- प्रभाकर, वि. (1993). हिंदी निबंध: परंपरा और प्रवृत्ति. वाराणसी: गंगा प्रकाशन।
- माचवे, प. (1982). हिंदी निबंध और भारतीय जीवन. दिल्ली: साहित्य अकादमी।
- रामविलास शर्मा. (1975). भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य. दिल्ली: राजकमल।
- वाजपेयी, न. (1971). समीक्षा के सिद्धांत. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।